International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

महिला एवं आर्थिक विकास

डॉ शिखा त्रिपाठी

एकेएस वि.वि.सतना

सार - वर्तमान समय में केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा महिला सशक्तिकरण की दिशा में अनेक नीतियों एवं. . कार्यक्रमों का निर्धारण किया जा रहा है। सन 1990 में साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित मेक्सिको के लेखक ऑक्टेवियो पाज के अनुसार सशक्तिकरण का तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपने जीवन का स्वयं ही संचालित एवं निर्देशित करने की क्षमता से है आज महिलाओं के सशक्तिकरण की बात की जाती है जिसकी कई आयाम जैसे नागरिक, राजनीतिक ,सामाजिक ,आर्थिक, सांस्कृतिक और। अपने अधिकारों और स्त्रियों की भागीदारी। मुख्य है। सशक्तिकरण यानी एक महिला के पास निर्णय लेने की ताकत। महिला शक्ति पारिवारिक सामाजिक आर्थिक राजनीतिक सभी क्षेत्रों में है।लेकिन किसी महिला की सशक्तिकरण की एक प्रक्रिया पूरी होती है जब उसके साथ सामाजिक, शारीरिक , मनोवैज्ञानिक सांस्कृतिक राजनैतिक अन्याय ना हो और वह इसके लिए स्वयं। जागरूक हो । कहीं। ना कहीं उसकी शिक्षा इसमें महत्वपूर्ण प्रक्रिया अदा करती है ।अतः मध्यप्रदेश शासन का लक्ष्य महिलाओं का पूर्ण सशक्तिकरण कर महिलाओं को सशक्त बनाना है। राज्य की महिला नीति की मूल अवधारणा महिलाओं को समाज में प्रतिष्ठा प्रदान करना तथा उनकी मानसिकता। में सकारात्मक परिवर्तन लाकर जीवन को समृद्ध और सुसंस्कृत बनाना है । एक महिला के साथ उसके तीन परिवार सुधरते और बनते हैं ।अतः प्रत्येक महिला। को शिक्षित व स्वरोजगार निर्मित होना आवश्यक है। जिससे उनके साथ विभेदीकरण की स्थिति समाप्त हो।

कुंजी शब्द- महिलाएं, आर्थिक विकास, सशक्तिकरण, सरकारी योजनाएं, समाज, संस्कृति

शोध विधि - द्वितीय स्रोतों पर आधारित सर्वेक्षण विधि है। जिसमें विभिन्न प्रकाशित जनरल एवं इंटरनेट से दत्तको को लिया गया है।

प्रस्तावना- भारतीय संस्कृति मर्यादा की संस्कृति है जहां प्राचीन वैदिक काल से ही नारी का स्थान सम्माननीय रहा है कहा भी गया है यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमंते देवता:। शुरुआत से ही परिवारों की देखरेख महिलाओं की ही जिम्मेदारी रही है जिसे वे बखूबी निभा रही है सभ्यता एवं संस्कृति के प्रारंभ में नारी है किंतु कालांतर में धीरे-धीरे सभी समाजों में नारी की महत्ता बढ़ रही है स्त्री शिक्षा का महत्व बताते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी कहा था एक लड़के की शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है किंतु एक लड़की की शिक्षा सारे परिवार की शिक्षा है कोठारी आयोग 1964 66 ने भी लिखा कि स्त्रियों की शिक्षा पुरुषों की शिक्षा से अधिक महत्वपूर्ण है माननीय साधनों के पूर्ण

विकास के लिए घरों का सुधार तथा बच्चों के आचरण को बचपन की पूरी प्लेट के सामने डालने के लिए स्त्री शिक्षा पुरुषों की शिक्षा से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है भारत में स्त्री शिक्षा की स्थिति हमेशा से ही सोचनीय रही है

विश्वविद्यालय आयोग के अनुसार यदि शिक्षा पुरुषों और स्त्रियों में से किसी एक के लिए आवश्यक हो तो यह स्त्रियों को दी जानी चाहिए क्योंकि वही भावी पीढ़ी की निर्माण करता है महिलाएं जब विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में संलग्न होती है तो उनकी भागीदारी विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है जैसे सामाजिक सांस्कृतिक कारण घरेलू कर्तव्यों को पूरा करते समय वह सामाजिक व सार्वजनिक जीवन से दूर चली जाती है और वह गतिविधियों से भी दूर हो जाती है जिससे वह स्वयं को समाज में अलग सा महसूस करती है मानसिक रूप से कमजोर महसूस करने लगती है अतः उन्हें सर्वप्रथम सामाजिक से पहले मानसिक रूप से संभल बनाना आवश्यक है जिसमें कोई भी सांस्कृतिक या सामाजिक कारक आड़ ना आ सके स्वास्थ्य देखभाल चिकित्सा सुविधा तकनीकी ज्ञान व जीवन कौशल इन विषयों के बारे में इन्हें समझा कर समृद्ध ता प्रदान की जा सकती है दूसरा विशेष कारक है क्षमता निर्माण पूंजी से ज्यादा आवश्यक है जीवन जीने हेतु क्षमताओं का विकास करना यह एक स्नेहक के रूप में देखा जा सकता है यदि उनमेंउनमें उपस्थित प्रतिभाओं को निखारने का कौशल प्रदान कर दिया जाए तो राष्ट्र की प्रत्येक महिला राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकती है

महिलाओं के सर्वांगीण विकास

महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु सरकारी प्रयास समाज एवं राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में स्त्री का योगदान होते हुए भी वह विभिन्न सामाजिक समस्याओं से जूझ रहे हैं जिनका समाधान कुछ विशेष कार्यक्रमों द्वारा किया जा सकता है जैसे नवाचार इत कार्यक्रम पाठ्यक्रम में सुधार शैक्षिक सुविधाएं छात्रवृत्ति अनुसंधान नौकरी की व्यवस्था इनमें से ज्यादातर कार्यक्रम सरकार द्वारा संचालित भी है किंतु इनकी जमीनी हकीकत कुछ और ही है इसका कारण विशेषता ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की मानसिकता है दुनिया 21वीं सदी पर पहुंच चुकी है किंतु सोच बहुत आयत में जहां की तहां है अभी भी बहुत से क्षेत्रों में महिलाओं को उपभोग की वस्तु समझा जाता है उसे सामाजिक या पारिवारिक निर्णयों में कोई स्थान नहीं दिया जाता जिसके कारण परिवार का बाहरी विकास भी अवरुद्ध हो जाता है क्योंकि प्रथम गुरु के रूप में माता ही तो है जो बच्चों को सही या गलत का निर्णय करना सिखलाती है तो जहां वह स्वयं शोषित है पीड़ित हैं और कतार में सबसे पीछे होगी वह अपने बच्चों को कैसे आत्मविश्वास का पाठ पढ़ा सकेगी अतः राष्ट्रीय शिक्षा परिषद मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री श्री भक्तवत्सलाम की अध्यक्षता में 1963 में एक समिति को नियुक्त किया गया जिसमें स्त्री शिक्षा के संबंध में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र में जनता के सहयोग योग के कारणों की जांच की तथा जनता के सहयोग के क्षेत्र स्त्री शिक्षा परिषद प्रचार कार्यक्रम पूर्व प्राथमिक शाला की व्यवस्था अध्यापिका नियुक्ति व पाठ्यक्रम में सुधार छात्रावास व्यवस्था जैसे मामलों में ग्रामीणों का सहयोग देने की बात की

जिससे महिलाओं का सामाजिक विकास हो जिससे वे अपने साथ देश के विकास में भी अपना योगदान दे सकें भारत में लैंगिक समानता को पढ़ाना बढ़ावा देने के दौरान महिला महिलाओं के सर्वांगीण विकास

महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु सरकारी प्रयास समाज एवं राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में स्त्री का योगदान होते हुए भी वह विभिन्न सामाजिक समस्याओं से जूझ रहे हैं जिनका समाधान कुछ विशेष कार्यक्रमों द्वारा किया जा सकता है जैसे नवाचार इत कार्यक्रम पाठ्यक्रम में सुधार शैक्षिक सुविधाएं छात्रवृत्ति अनुसंधान नौकरी की व्यवस्था इनमें से ज्यादातर कार्यक्रम सरकार द्वारा संचालित भी है किंतु इनकी जमीनी हकीकत कुछ और ही है इसका कारण विशेषता ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की मानसिकता है दुनिया 21वीं सदी पर पहुंच चुकी है किंतु सोच बहुत आयत में जहां की तहां है अभी भी बहुत से क्षेत्रों में महिलाओं को उपभोग की वस्तु समझा जाता है उसे सामाजिक या पारिवारिक निर्णयों में कोई स्थान नहीं दिया जाता जिसके कारण परिवार का बाहरी विकास भी अवरुद्ध हो जाता है क्योंकि प्रथम गुरु के रूप में माता ही तो है जो बच्चों को सही या गलत का निर्णय करना सिखलाती है तो जहां वह स्वयं शोषित है पीड़ित हैं और कतार में सबसे पीछे होगी वह अपने बच्चों को कैसे आत्मविश्वास का पाठ पढ़ा सकेगी अतः राष्ट्रीय शिक्षा परिषद मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री श्री भक्तवत्सलाम की अध्यक्षता में 1963 में एक समिति को नियुक्त किया गया जिसमें स्त्री शिक्षा के संबंध में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र में जनता के सहयोग योग के कारणों की जांच की तथा जनता के सहयोग के क्षेत्र स्त्री शिक्षा परिषद प्रचार कार्यक्रम पूर्व प्राथमिक शाला की व्यवस्था अध्यापिका नियुक्ति व पाठ्यक्रम में सुधार छात्रावास व्यवस्था जैसे मामलों में ग्रामीणों का सहयोग देने की बात की जिससे महिलाओं का सामाजिक विकास हो जिससे वे अपने साथ देश के विकास में भी अपना योगदान दे सकें भारत में लैंगिक समानता को पढ़ाना बढ़ावा देने के दौरान महिला सामाजिक कार्यकर्ताओं को सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में विभिन्न जनपदों से चुनौतियों का सामना करना पड़ता है लिंग आधारित सामाजिक ढांचे का परिवर्तन और राज्य की नीतियों द्वारा शासित विभिन्न संगठनों और संस्थानों के टकराव इस प्रकार महिलाओं की चिंताओं पर नीति समर्थन द्वारा निहित है

आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान।

राष्ट्र के आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान सुनिश्चित करने एवं प्रत्येक महिला को आत्मनिर्भर बनाने हेतु सरकार द्वारा विभिन्न सरकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं जिनमें जी डी पी में भी सुधार हो रहा है ग्रामीण महिलाओं के लिए स्व सहायता समूह की स्थापना की गई नाबार्ड द्वारा की गई है जिसमें वह अपनी व्यक्तिगत रूचि के आधार पर कार्य करने हेतु स्वतंत्र हैं तथा जिसके लिए बैंक द्वारा आवश्यक धन भी उपलब्ध कराया जाता है जिससे महिलाएं अपनी बचत को बैंक में जमा करती हैं इससे स्वयं भी व आर्थिक रूप से संपन्न है । समाज के आर्थिक रूप से वंचित हिस्सों में महिलाओं के क्षमता निर्माण में सहायता के लिए व्यक्तिगत समूह व संगठनों की स्थापना भी की गई है शोध के अनुसार अब व्रत महिलाएं भी जो अकेले परिवारों में रहती है वह सामाजिक गतिविधियों में संलग्न

होकर पिछड़े वर्गों की शिक्षा में अपना योगदान दे सकते हैं महिलाओं के अधिकारों और कानूनी हकों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए सन 1990 में संसद में अधिनियम पारित किया गया और राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की गई इतिहासिक तथ्यों पर ध्यान दें तो वर्ष 1946 में संविधान सभा विधानसभा में 150 सदस्य थे उनमें से 16 महिलाओं को शामिल किया गया और आजादी के बाद महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में प्रयास शुरू हो गया था। पंचायतों एवं नगर निगम में महिलाओं के लिए आरक्षित करने के लिए 1993 में सविधान में 73 व 74 में संशोधन किया गया जिसमें पंचायती राज संस्थाओं में 33% आरक्षण दिया गया और पहली बार लगभग 1000000 महिलाएं जनप्रतिनिधि के रूप में चुने गए भारत सरकार ने 27 अगस्त 2009 को ग्राम स्तर पर महिलाओं का सशक्तिकरण करने के लिए पूर्व से प्राप्त 33% आरक्षण को बढ़ाकर 50% करने का प्रस्ताव दिया था जो बाद में लागू कर दिया गया 8 मार्च 1910 से राष्ट्रीय

महिला सशक्तिकरण मिशन का शुभारंभ किया गया महिलाओं की राष्ट्रीय नीति बनाई गई जिसका मुख्य लक्ष्य महिलाओं की उन्नति विकास और सशक्तिकरण को सुनिश्चित करना था महिलाओं को चारदीवारी से निकालकर सामाजिक एवं मानसिक रूप से स्वयं को सख्त करने हेतु आज महिलाओं को ही प्रयास करने होंगे इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर नहीं स्वरोजगार योजना स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना प्रारंभ की गई संगठन में शक्ति होती है इस संप्रत्यय को लेकर महिलाओं को विभिन्न समस्याओं के निराकरण हेतु स्व सहायता समूह योजना 1 अप्रैल 1999 से प्रारंभ की गई इसका उद्देश्य आपस में मिलकर सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं का समाधान करना है समूह द्वारा सदस्यों में आपस में एक दूसरे के प्रति वफादारी सहानुभूति सहयोग सहायता सामंजस्य ईमानदारी के गुणों का विकास होता है एवं अन्य 2010 द्वारा इंदौर जिले में स्व सहायता समूह के 80 सदस्यों पर अध्ययन किया गया और पता लगाया गया कि महिलाओं में आर्थिक स्थिति में सुधार परिवार कल्याण हेतु निर्णय क्षमता में वृद्धि राजनीतिक गतिविधियों में वृद्धि तथा स्वयं का विकास कर सकी इसी समूह के द्वारा संभव हो सका महिलाओं ने सामाजिक सशक्तिकरण हेतु बालिका जन्म पर सकारात्मक वातावरण निर्माण हेतु मध्य प्रदेश सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं जैसे लाड़ली लक्ष्मी योजना ,बेटी बचाओ अभियान, बेटी पढ़ाओ, स्वागतम् लक्ष्मी योजना ,कन्या अभिभावक योजना ,लाडो अभियान ,गांव की बेटी योजना, प्रतिभा किरण योजना ,मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना लागू की गई ।खेल के क्षेत्र में महिलाओं का रुझान बढ़ाने के लिए महिला हॉकी अकादमी की स्थापना की गई घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम अंतर्गत उषा किरण योजना भी लागू की जा रही है महिला सुरक्षा की दृष्टि से विभिन्न सरकार द्वारा महिला थानों में महिला डेस्क विशेष महिला थाना 1090 महिला कॉल सेंटर स्थापित किए गए महिला हेल्पलाइन के माध्यम से विभिन्न शिकायतों का निराकरण भी संभव हो पा रहा है आर्थिक विकास में महिलाओं की भागीदारी के मामले में दुनिया भर के 145 देशों में भारत का स्थान 139। यदि देश की संसद में महिलाओं का योगदान हो तो यह सकल घरेलू उत्पाद की दर जो अभी 22% है उसमें 27% की वृद्धि हो सकती है जबकि वैश्विक औसत से 45% का ही है भारत सरकार की पालकी आंकड़ों के मुताबिक देश की वर्कफोर्स

महिला हिस्सेदारी 25.5% पुरुषों का हिस्सा 26% कामकाजी महिलाओं में तकरीबन 63% खेती बाड़ी काम में लगी हुई है

देश में हिमाचल प्रदेश सबसे आगे और दिल्ली अभी भी सबसे पीछे है।वर्ल्ड बैंक के अनुसार भारत में महिलाओं की नौकरी छोड़ने की दर सबसे अधिक है इसका कारण कैरियर बनाने की उम्र में होने वाली शादी में नीति आयोग के अनुसार भारत को लगातार 3:00 तक 9:00 से 10% की वृद्धि दर हासिल करने और युवा आबादी का लाभ उठाने के लिए महिलाओं में उद्यमशीलता बढ़ाने की जरूरत है भारत में प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता गुरु रविंद्र नाथ टैगोर के अनुसार हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी है । अनादिकाल से महिलाएं मानवता की प्रेरणा स्रोत ही रहे हैं ।महिलाओं में जन्मजात गुण है नेतृत्व और यही गुण समाज के लिए एक संपत्ति है प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता बकिंघम ने कहा जवाब एक आदमी को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को ,शिक्षित करते हैं और जब महिला को पढ़ाते हैं तो ३पीढिया शिक्षित होती हैं।इसलिए इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम एक स्थाई कल के लिए आज लैंगिक समानता है भारत की नारी ने कब राष्ट्र का हाथ नहीं था मैं हमेशा ही पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती रहे आनंदीबाई गोपालराव जोशी पहली भारतीय महिला चिकित्सक की बात हो या आधुनिक समय में कोविड-19 के समय कोरोनावायरस टीकाकरण अभियान को सफल बनाने वाली भारत बायोटेक की एमडी सुचित्रा रुतैला जिन्होंने को विनायक सेन को वैक्सीन विकसित की जिनके सामने सारा विश्व घुटने टेक रहा है आज निसंदेह महिलाएं और लड़कियां समाज में बदलाव के अग्रदूत है आज

निसंदेह महिलाएं और लड़कियां समाज में बदलाव के अग्रदूत है आज महिलाओं के पराक्रम को समझने की जरूरत है जोए हम अपने में अपना सहयोग और समर्थन देकर बढ़ने और फलने फूलने में मदद करें।

निष्कर्ष

अंत में यह कहा जा सकता है कि यदि एक महिला शिक्षित है तो उसके द्वारा सारे समाज को नई दिशा दी जा सकती है पारिवारिक रूप से जिस तरह वह अपना सर्वश्रेष्ठ देती है उसी प्रकार देश के लिए भी दे सकेगी ।"बूंद बूंद से घड़ा भरता है" यह संकल्पना प्रत्येक घर की महिलाओं से प्रारंभ होती है हर घर से शिक्षित व आत्मनिर्भर महिला सारे देश में हर्षोल्लास व आर्थिक विकास में मदद कर सकती है महिलाएं किसी भी पद पर हूं उनके लिए यह आवश्यक है कि वे संसाधनों का उचित उपयोग करें नीतियों का पालन करें अपने प्रयासों और संस्थाओं के माध्यम से अपने कल्याण को ध्यान में रखें सभी को लाभान्वित कर देश का विकास करने में मदद करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रसाद ,राजेंद्र(2005) : मेरे सपनों का भारत ,अहमदाबाद शर्मा, रमेश चंद्र (2000):। महान देशों का आर्थिक विकास, राजेश प्रकाशन मेरठ ।

शुक्ला,आशुतोष : पंचायती राज की बदलती तस्वीरें कुरुक्षेत्र ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली ।

भदौरिया ,सुरजीत सिंह (2015) : पंचायती राज एवं महिला सशक्तिकरण रिसर्च बैंक इंटरनेशनल जनरल 132 ।

सांक्य ,सुधा (2014), : महिलाओं के विकास की अभिनव पहल_ स्व सहायता समूह, दिव्य शोध संसार इंटरनेशनल जनरल। आईएसएसएन 2394 3807। ।

कॉग, सुरेश एवं अन्य(2015) : मध्य प्रदेश महिला नीति 2015 एक विवेचना , दिव्य शोध संसार इंटरनेशनल जनरल आईएसएस एंड 2394 -3807।

बीबीसी न्यूज़ हिंदी डॉट कॉम।

दत्तात्रेय ,बंडारू : हरियाणा राजभवन डॉट गवर्नमेंट डॉट इन